छत्तीसगढ़ विधानसभा
CHHATTISGARH LEGISLATIVE ASSEMBLY

भारत में विधायी निकायों के पीठासीन अधिकारियों का
70 वां सम्मेलन

70th Conference of Presiding Officers of
Legislative Bodies in India

माननीय श्री प्रेम प्रकाश पाण्डेय
अध्यक्ष

द्वारा

स्वागत उद्‌बोधन

WELCOME ADDRESS

by

Hon'ble Shri Prem Prakash Pandey
Speaker

मंगलवार, दिनांक 15 नवम्बर, 2005
Tuesday, 15th November, 2005

रायपुर
Raipur

Hon'ble Chairman, and Chief Guest,
of the Conference,
Shri Somnath Chatterjee;
Hon'ble Deputy Chairman, Rajya Sabha
Shri K.Rahman Khan;
Hon'ble Deputy Speaker, Lok Sabha
Sardar Charnjit Singh Atwal;
Hon'ble Fellow Presiding Officers from State Legislatures;
Hon'ble Chief Minister, Chhattisgarh Dr. Raman Singh;
Hon'ble Ministers;
Hon'ble Members of Parliament;
Hon'ble Legislators;
Learned Secretaries-Generals of Lok Sabha and Rajya Sabha; Secretaries of State Legislatures;
Journalists;
Ladies and Gentleman.

I welcome you all to Chhattisgarh – the pious land of Rishi Jamadagni surrounded by Maikal Sihava and Ramgiri mountain ranges, the sacred land of Lord Rama's mother, Kaushalya.

सम्मेलन के माननीय सभापति एवं मुख्य अतिथि श्री सोमनाथ चटर्जी जी,
माननीय उपसभापति, राज्यसभा, श्री के. रहमान खान जी,
माननीय उपाध्यक्ष, लोकसभा, सरदार चरणजीत सिंह अटवाल जी,
विधान मंडलों से पधारे माननीय पीठासीन अधिकारी,
छत्तीसगढ़ के माननीय मुख्य मंत्री डॉ. रमन सिंह जी,
मंत्रिपरिषद् के माननीय मंत्रीगण,
माननीय सांसद,
माननीय सदस्यगण,
प्रबुद्ध महासचिव लोकसभा, राज्यसभा,
विधानमंडलों के प्रमुख सचिव/सचिव
उपस्थित पत्रकार बंधुओं
एवं
समस्त आमंत्रित अतिथिगण

मैकल सिहावा, और रामगिरि की पर्वत श्रेणियों से घिरे हुए ऋषि जमदग्नि की तपोभूमि मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम को जन्म देने वाली माता कौशल्या की पावन धरती, छत्तीसगढ़ आगमन पर आप सब का मैं शत्–शत् अभिनंदन करता हूँ।

Chhattisgarh, the land of the author of Ramayana - the great poet Valmiki; the place where Lord Rama, Laxman and Sita took shelter during their exile, the birth place of Luv and Kush and the sacred land of sage Shringi (who performed Kameshthi yagna for King Dasharatha so as to be blessed with the birth of a son) welcomes you all. I welcome all of you to the forests, mountains, and fertile valleys of the sacred land of Chhattisgarh, the vibrant tribal dominated land enriched with life infusing cultural consciousness of its own and on behalf of two crore people of the State of Chhattisgarh.

Our heartiest greetings to you in the land that has imbued the proverb "Atithi Devo Bhavah" and the land of King Moradhwaj who sacrificed his progeny for the sake of hospitality.

We are pleased and overwhelmed to see such great dignitaries among ourselves from all over India in this ascetic grove of saints and seers like Agastya, Lopamudra, Pravarsen, Pushpadant the great poet Kalidas, Sutanuka Devdasi, Vallabhacharya, Nagarjuna and the likes in Dandakaranya.

I once again welcome and extend my hearty gratitude to all the invitees for having come to this sacred land nurtured by the sweet murmuring of rivers like Shabari, Indravati, Mahanadi, Shivnath, Kharun, Hasdo, Mand, Eev, Pairi, Kelo, Udanti, Maniyari, Arapa, Rihand and kanhar; fertile and fragrant land of Chhattisgarh resting in soothing

रामायण के रचयिता, महाकवि बाल्मिकि की तपोभूमि, वनवास काल में श्री राम, लक्ष्मण व माता सीता की शरणस्थली, लव–कुश की जन्मभूमि और राजा दशरथ को पुत्र कामेष्ठि यज्ञ कराने वाले श्रृँगी ऋषि की पावन साधना भूमि में आप सब का हार्दिक स्वागत है। प्राणवान सांस्कृतिक चेतना से समृद्ध विशिष्ट आदिवासी बहुल अंचल वनों, पहाड़ों तथा उपजाऊ घाटियों से छत्तीसगढ़ की पावन भूमि एवं दो करोड़ छत्तीसगढ़ वासियों की ओर से मैं आप सब का आत्मीय स्वागत करता हूँ।

"अतिथि देवो भवः" की पावन भावभूमि से अनुप्राणित, अतिथि सत्कार एवं अतिथि सम्मान के लिये अपनी संतान तक की आहूति देने का सामर्थ्य रखने वाले महान राजा मोरध्वज की संकल्प भूमि में आप सब का स्वागत है।

अगस्त्य, लोपामुद्रा, प्रवरसेन, पुष्पदंत, महाकवि कालिदास, सुतनुका देवदासी, वल्लभाचार्य, नागार्जुन आदि प्रकाण्ड मनीषियों की पावन तपोस्थली दंडकारण्य की पावन भूमि में पूरे भारत वर्ष से पधारे सम्माननीय अतिथियों को अपने मध्य पाकर हम सब हर्षित और आल्हादित हैं।

शबरी, इन्द्रावती, महानदी, शिवनाथ, खारून, हसदो, मांड, ईव, पैरी, केलो, उदंती, मनियारी, अरपा, रिहन्द और कन्हार नदियों की कल–कल करती पावन जलधारा से पोषित, छत्तीसगढ़ की उर्वर, उपजाऊ, सौंधी–सौंधी माटी की सुवासित, प्राकृतिक महक में रची–बसी धान की हजारों दुर्लभ किस्मों की मनभावन महक से भारतवर्ष को मुग्ध कर **"धान का कटोरा"** के नाम से प्रसिद्धि और राष्ट्रीय ख्याति

natural surrounding; a home to numerous aromatic varieties of rice and rightly known as the 'rice bowl of India'.

On this historic occasion, I am not able to resist the temptation of going into the brief history of Chhattisgarh which is full of glory and rich cultural heritage.

We can trace the roots of history of Chhattisgarh to South Kausal as defined in the Ramayana, the Mahabharata, Ashtadhyayi of Panini (6th Century B.C.), Astrological books of Varahamihir, the Vishnupurana, the Vayupurana, the Gupata period inscriptions, the Vakatak period inscriptions and the inscriptions of Pandava's period (4th Century to 10th Century A.D.). South Kausal was Rama's maternal home. The history of Chhattisgarh finds a place in the annals of several dynasties rich in glorious traditions such as Saatvahan, Meghvansh, Vakatak, Nal, Sharabhpuriya, Panduvanshi, Nalvanshi, Somvanshi, Kulchuri, Nag, Chalukya etc. As far as the nomenclature of Chhattisgarh is concerned, we can trace it to title of Chedishwar in Kulchuris and 36 dwellings or fortresses (Durgs) of Avrajaks. This nomenclature has been adopted since 1497.

Chhattisgarh has made its own unique contribution to the freedom movement. There are glorious legacies of extraordinary valour and supreme sacrifices by martyrs such as Veernarain Singh, revolutionary Surendra sai, Gundadhur, Lal Kalindra Singh, Gazi Khan, Pt. Sunderlal Shrama,

अर्जित करने वाले छत्तीसगढ़ की माटी में आप सब अतिथियों का मैं हार्दिक स्वागत, नमन, वंदन, अभिनंदन और तहे दिल से इस्तकबाल करता हूँ।

इस ऐतिहासिक अवसर पर मैं छत्तीसगढ़ के गौरवशाली इतिहास तथा इस संस्कार संपन्न प्रदेश की संक्षिप्त जानकारी आपके समक्ष रखने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ।

रामायण, महाभारत पाणिनि की अष्टाध्यायी (ईसा पूर्व छठी शताब्दी) वराहमिहिर के ज्योतिष ग्रंथ, विष्णुपुराण, वायुपुराण, गुप्त अभिलेख वाकाटक अभिलेख, तथा पांडुवंशी अभिलेखों (चौथी शताब्दी से दसवीं शताब्दी तक) में दक्षिण कोसल के रूप में छत्तीसगढ़ का वर्णन मिलता है। दक्षिण कोसल भगवान राम का ननिहाल था। छत्तीसगढ़ का इतिहास अनेक राज्यों, साम्राज्यों का उल्लेख करता है, जिनकी अनेक गौरवशाली परम्पराएँ रही है जिनमें मुख्य है, सातवाहन, मेघवंश, वाकाटक, नल, शरभपुरीय, पांण्डुवंशी, नलवंशी, सोमवंशी, कल्चुरी, नाग और चालुक्य आदि। जहां तक छत्तीसगढ़ के नामकरण का सवाल है छत्तीसगढ़ नाम की व्युत्पत्ति कल्चुरियों की उपाधि चेदीश्वर, आव्रजकों के 36 घरों या छत्तीस दुर्गो (गढ़ों) से मानी जाती है। यह नाम 1497 से चलन में आया।

स्वतंत्रता आंदोलन में छत्तीसगढ़ का भी अद्वितीय योगदान है। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये शहीद वीरनारायण सिंह, क्रांतिकारी सुरेन्द्र साय, गुण्डाधुर, लाल कालिन्द्र सिंह, गाजी खाँ, पं0 सुन्दरलाल शर्मा, पं0 रविशंकर शुक्ल, माधवराव सप्रे, ठाकुर प्यारे लाल सिंह, डॉ. इ. राघवेन्द्र राव, डॉ. खूबचन्द बघेल,

Pt. Ravishankar Shukla, Madhavrao Sapre, Thakur Pyare lal Singh, Dr E. Raghavendra Rao, Dr. Khoobchand Baghel, Barrister Thakur Chhedilal and the likes.

You are well aware of the struggle of the people of Chhattisgarh aimed at establishing their distinct identity and dignity. The culmination of the struggle was in the form of blissful outcome when the Lok Sabha passed Madhya Pradesh Reorganisation Bill on 31st July, 2000 and our long cherished dream was realized when our dream State of Chhattisgarh came in to being on 1st Nov. 2000 as the 26th State of the Indian Union.

Hon. Guests, Chhattisgarh is known for the living majesty of Siddha Peeth of Mahamaya Devi of ancient town of Ratanpur, Bamleshwari Mata of Dongargarh and Godly grace of Mother Danteshwari of Dantewara. Chhattisgarh is also known for religious preachings of Lord Buddha and the brith place of Vallabhacharya. Chhattisgarh is known for the inspiring couplets of saint poet Kabir. World famous folk art-forms of Sua, Dadaria, Karma, Panthi, Pandwani are rich in cultural consciousness and they bestow a distinct identity to Chhattisgarh.

Chhattisgarh has produced theatre artists of international fame like Padma Bhushan Habib Tanveer, Shri Satyadev Dubey and Late Dr. Shankar Shesh who have

बैरिस्टर ठाकुर छेदीलाल जैसे अनेक क्रांतिकारी जुझारू और सर्वस्व समर्पण कर देने वाले महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के शौर्य, साहस, पराक्रम, त्याग और बलिदान उनका अपूर्व योगदान, छत्तीसगढ़ की गौरवशाली थाती है।

अस्मिता की तलाश निजता और अपनी पृथक पहचान की छटपटाहट निजता एवं पृथक छत्तीसगढ़ के लिये, छत्तीसगढ़वासियों के संघर्ष की कहानी से आप सब अवगत हैं। अस्मिता की लंबी लड़ाई का ही यह सुखद परिणाम था कि 31 जुलाई 2000 को लोकसभा में मध्य प्रदेश पुनगर्ठन विधेयक पारित हुआ, हमारा चिरप्रतीक्षित सपना पूरा हुआ और दिनांक 01 नवंबर 2000 को हमारा सपनों का, हमारा अपना छत्तीसगढ़ भारत के मानचित्र पर 26 वें गणराज्य के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

माननीय अतिथिगण, छत्तीसगढ़ जाना जाता है, प्राचीन पावन नगरी रतनपुर की सिद्ध पीठ महामाया देवी की जाग्रत महिमा के लिए, डोंगरगढ़ की माता बम्लेश्वरी और दंतेवाड़ा स्थित माँ दंतेश्वरी की सहज सुलभ दैवीय कृपा के लिये। छत्तीसगढ़ की ख्याति है, भगवान बुद्ध की कर्म भूमि के रूप में, वल्लभाचार्य की जन्मस्थली होने का गौरव भी छत्तीसगढ़ को प्राप्त है। छत्तीसगढ़ प्रसिद्ध है महान संत कवि कबीर की अमृतवाणी के लिए। छत्तीसगढ़ की पहचान है सांस्कृतिक चेतना से समृद्ध संपन्न प्रदेश के रूप में, सुआ, ददरिया, करमा, पंथी, पंडवानी छत्तीसगढ़ की जगप्रसिद्ध लोक विधाएँ हैं।

पद्मभूषण हबीब तनवीर, श्री सत्यदेव दुबे, स्व. डॉ. शंकर शेष ये ऐसे महान अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के रंगकर्मी हैं

represented India abroad in the field of art and culture and brought glory to Chhattisgarh State. Chhattisgarh is known to be State nurturing peace, devoid of violent fundamentalism and bigotry. I would like to tell you that Chhattisgarh has its special identity as a vibrant, awakened and energetic state which integrates and adapts itself to the core to the current of time and homogenizes all outside influences in the respective fields.

Chhattisgarh is widely known for the cultural contribution of Raja Chakradhar, a great soul dedicated to art, literature, Babu Rewaram, Pinglacharya Bhanukavi, Late Pt. Lochan Prasad Pandey, Padma Shri Late Mukutdhar Pandey, Late Padumlal Punnalal Bakshi, Baldev Prasad Mishra, Gajanan Madhav Muktibodh and Late Shrikant Verma who have given us excellent works in Literature. Chhattisgarh is basically a state of villages and towns. It exhibits a Kaleidoscopic world of different customs, festivals, values, conventions, lifestyles, languages and dialects, folk songs and music, crafts and paintings. The Father of Chhattisgarh's folkart, Dau Ramchandra Deshmukh, famous pandwani singer Padmabhushan Teejanbai and 'Panthi' dancer Late Devdas Banjare are names so famous which need no introduction. The pioneer of social revolutions and founder of 'Satnami Samaj' Guru Ghasidas is one of the greatest sons of Chhattisgarh.

जिन्होंने कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में विदेशों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है तथा छत्तीसगढ़ का नाम रोशन किया है। छत्तीसगढ़ जाना जाता है हिंसात्मक धर्मान्धता एवं कट्टरवाद से अछूते एक शांति प्रिय प्रदेश के रूप में। मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि छत्तीसगढ़ की एक चैतन्य, जागृत और ऊर्जा संपन्न प्रदेश के रूप में विशिष्ट पहचान है क्योंकि छत्तीसगढ़ में आत्मा और सभ्यता में अनुकूलन और समाकलन का अदभुत समन्वय है, बाह्य तत्वों को आत्मसात करने की अपूर्व क्षमता भी।

छत्तीसगढ़ विख्यात है महान कलासाधक राजा चक्रधर के सांस्कृतिक अवदान, साहित्य समाराधक, बाबू रेवाराम, पिंगलाचार्य भानुकवि, स्व. पंडित लोचन प्रसाद पाण्डेय, पद्मश्री स्व. मुकुटधर पाण्डेय, स्व. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, बल्देव प्रसाद मिश्र, गजानंद माधव मुक्तिबोध तथा स्व. श्रीकांत वर्मा जैसे दिग्गज, मूर्धन्य साहित्य मनीषियों की अनुपम रचनाओं व कृतियों के लिए/छत्तीसगढ़ व्यापक रूप से गांवों/कस्बों का प्रदेश है। यहां रीति रिवाज, पर्वोत्सव मूल्य, संस्कार और मान्यताएँ, जीवन शैली, भाषा, बोली, लोकगीत, लोक संगीत, शिल्प और चित्रकला का अनूठा विराट संसार है। छत्तीसगढ़ लोककला के पितामह दाऊ रामचन्द्र देशमुख, पंडवानी गायिका पद्मभूषण तीजन बाई और पंथी नर्तक स्व. देवदास बंजारे को भला कौन नहीं जानता ? सामाजिक क्रांति के अग्रदूत सतनामी समाज के प्रणेता गुरू घासीदास छत्तीसगढ़ की महान विभूति के रूप में जाने जाते हैं।

Chhattisgarh commands a special identity for itself in the course of evolution of civilizations. There are still vibrant links between the present and past of Chhattisgarh's 5000 year old civilization. The Buddhist Mutths of Sirpur, Construed by Ashoka the Great, tells the tale of a glorious past. The tradition of drama and folk-theatre is very rich here as evident in the form of old cave-theatres of Raigarh. Be it the Ganesh Utsav or dance of Raigarh or the only Music University in the Asian Continent devoted to art and dance-Khairagarh Sangeet University, be it the Dussehra festival of Bastar or the 'Prayag of Chhattisgarh' Bhagwan Rajeev Lochan temple in Rajim, be it the 'Khajuraho of Chhattisgarh' Bhoramdev or the Buddhist-Vihars of Turturiya – all of these are the vibrant examples of historical archaeological heritage and rich architecture of Chhattisgarh.

There is evidence to suggest that the rivers of this area have produced diamonds and gold. The State has hidden in her crest the treasure of diamonds, gold, boxite, iron-ore, coal, dolomite and other minerals. The quest for diamond and gold has elevated this State to greater heights at the international level for this purpose. After the completion of excavation works for diamond in Devbhog area, Chhattisgarh would occupy a top position among the mineral rich States. The Coal India company in our State supplies coal to all parts of the country. The iron-ore

सभ्यताओं के विकास में छत्तीसगढ़ की सभ्यता की एक विशेष पहचान है। छत्तीसगढ़ की पाँच हजार वर्ष पुरानी सभ्यता में आज भी अतीत और वर्तमान के बीच की कड़ियाँ सशक्त है। बस्तर में अशोक द्वारा बनवाए गए बौद्ध मठ, सिरपुर के प्राचीन युगीन सभ्यता के पुरावशेष एक गौरवशाली कालखंड की कहानी कहते हैं। यहां की नाट्य परंपरा अत्यंत समृद्ध है, रायगढ़ के प्राचीनतम गुफा नाट्यगृह (थिएटर) यहां की हजारों वर्षों की सभ्यता के प्रमाण हैं। रायगढ़ का गणेश उत्सव हो, या रायगढ़ घराने का नृत्य, या एशिया महाद्वीप का, संगीत एवं कला को समर्पित एकमात्र खैरागढ़ संगीत विश्व विद्यालय या बस्तर का दशहरा महोत्सव हो, या राजिम में छत्तीसगढ़ का प्रयाग कहा जाने वाला भगवान राजीव लोचन का धाम, छत्तीसगढ़ के खजुराहो के नाम से प्रसिद्ध भोरमदेव हो, या तुरतुरिया के भिक्षुणी बिहार ये सब छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक पुरातात्विक धरोहर और समृद्ध स्थापत्य, कला के जीवंत प्रमाण हैं।

ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि इस अंचल की नदियां हीरा और सोना उगलती थीं। रत्नगर्भा छत्तीसगढ़ महतारी के गर्भ में हीरा, सोना, बॉक्साइट, लौह–अयस्क, कोयला डोलोमाइट, एवं अन्य उपयोगी खनिजों का अकूत भंडार है। सोना और हीरा जैसे बहूमुल्य खनिज संपदा की खोज ने इस प्रदेश को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नई ऊँचाई प्रदान की है। देवभोग में हीरा उत्खनन के प्रयासों के पूर्ण हो जाने पर हमारा छत्तीसगढ़ भारत वर्ष के सबसे संपन्न प्रदेश के रूप में शीर्ष स्थान पर होगा। छत्तीसगढ़ स्थित कोल इंडिया की कंपनियों से पूरे भारतवर्ष में कोयले की आपूर्ति की जाती है। बस्तर के हमारे

produced in Bastar district is of very high grade which is exported by National Mineral Development Corporation from Bailadila. The power generated by Korba and Sipat units of NTPC and Chhattisgarh SEB is supplied to different regions of the State and the country as well, which is a testimony to our rich power infrastructure. Bhilai Steel Plant a jewel under Steel Authority of India is the pride of India and Chhattisgarh. This plant manufactures world class iron items and the longest rail-tracks in Asia.

Balco and other reputed industrial units have brought recognition to the name of Chhattisgarh on the world-map. It is now known as a State marching forward speedily on the industrial track.

Chhattisgarh consists of 16 districts, has about 43.85% forest-cover and has abundant forest produce, minerals and agro-products. We are committed to the development of our infrastructure for which our motto is 'Bahujan Hitay and Bahujan Sukhaye'(Good for all). With self-respect as our wealth, hospitality our culture, peace our weapon and tolerance our power, Our State is a synonym of a temple of tolerance and a confluence of cultural traditions.

लौह अयस्क की गणना उच्च कोटि के अयस्क के रूप में है, जिसे बैलाडीला से राष्ट्रीय खनिज विकास निगम द्वारा निर्यात किया जाता है। नेशनल थर्मल पावर कारपोरेशन की कोरबा एवं सीपत इकाई से तथा छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल द्वारा उत्पादित बिजली प्रदेश एवं देश के विभिन्न हिस्सों को रोशनी देकर छत्तीसगढ़ की अप्रतिम ऊर्जा संपन्नता को प्रमाणित करता है। भारत वर्ष का गौरव, भारतीय इस्पात प्राधिकरण का भिलाई स्टील प्लांट–छत्तीसगढ़ की शान है भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा विश्व स्तरीय लौह सामग्री एवं एशिया में सबसे लंबी रेलपांत का निर्माण किया जाता है।

भारत एल्युमीनियम कॉरपोरेशन–बाल्को एवं अन्य प्रतिष्ठित औद्यौगिक प्रतिष्ठानों, उपक्रमों ने विश्व के मानचित्र पर प्रदेश का नाम अंकित किया है। आज छत्तीसगढ़ औद्यौगिक मानचित्र पर अत्यंत तीव्र गति से अग्रसर प्रदेश के रूप में जाना जाने लगा है।

16 जिलों में विस्तारित हमारा छत्तीसगढ़ लगभग 43.85 प्रतिशत वनों से अच्छादित वन संपदाओं, खनिज संपदाओं एवं कृषि संपदा से भरपूर है तथा अधोसंरचना के त्वरित विकास के लिये निरंतर संकल्पित है "बहुजन हिताय और बहुजन सुखाय" हमारा मूलमंत्र है। स्वाभिमान हमारी पूंजी, आतिथ्य सत्कार हमारी परंपरा, शांति हमारा हथियार, और सहिष्णुता हमारी शक्ति है और इसीलिये हमारा छत्तीसगढ़ सहिष्णुता का तीर्थ और अपनी आदर्श परम्पराओं और संस्कारों के कारण सद्भावना का संगम स्थल कहलाता है।

Friends, I have tried to brief you about the diverse features of the culture of this State. I hope it will be useful as well as interesting for all of you.

Hon. Guests, once again, I welcome you all in this All India Conference of Presiding Officers, 70th of its kind since 1921. Chhattisgarh is a newly born, emerging state. Although parliamentary journey of our Chhattisgarh Vidhan Sabha is short, our faith and commitment towards democratic ideals is not less in any respect. It is a rewarding outcome of our untiring efforts and our devotion and commitment to the system of democracy towards developing a suitable work culture as per the parliamentary ideals, traditions and procedures that today even while the State is in its infancy we have had the good fortune of organizing an All India function of this level.

While giving credit of this achievement to Shri Somnath Chatterjee, Hon'ble Speaker, Lok Sabha and the Lok Sabha Secretariat I express my gratitude to all those who not only considered the proposal related to organizing the next conference by us during the Kolkata Conference but also provided us a historic opportunity by giving instant permission to us to organize the conference. I also want to say on this occasion that we are overwhelmed with the graceful presence and company of eminent parliamentarians, well-known scholars in the parliamentary

साथियों, संक्षेप में मैंने आपको छत्तीसगढ़ की विविध विशिष्टताओं की यथासंभव संक्षिप्त जानकारी देने का प्रयास किया है, आशा करता हूँ कि आपके लिये यह जानकारी उपयोगी और रूचिकर साबित होगी।

माननीय अतिथिगण, 1921 से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के इस 70वें सम्मेलन में मैं एक बार पुनः आपका स्वागत करता हूँ। छत्तीसगढ़ नवसृजित, नवोदित राज्य है। यद्यपि छत्तीसगढ़ विधान सभा की संसदीय यात्रा अल्प अवधि की है, किन्तु प्रजातंत्र के सिद्धांतों में हमारी निष्ठा, विश्वास और हमारी आस्था किसी भी प्रकार से कम नहीं है। संसदीय संस्कारों, परम्पराओं और प्रक्रियाओं के अनुरूप एक विशिष्ट कार्य संस्कृति विकसित करने की हमारी निरंतर कोशिश, लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं के प्रति समर्पण और प्रतिबद्धताओं का ही सुपरिणाम है कि शैशव अवस्था में ही हमें अखिल भारतीय स्तर पर प्रतिष्ठित ऐसे महत्वपूर्ण आयोजन का अभूतपूर्व अवसर प्राप्त हुआ है।

मैं इस उपलब्धि का श्रेय माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री सोमनाथ चटर्जी जी एवं लोकसभा सचिवालय को देते हुए उन सब के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ कि उन्होंने कलकत्ता सम्मेलन में हमारे द्वारा अगला सम्मेलन आयोजित करने संबंधी प्रस्ताव पर न केवल विचार किया वरन् शीघ्र स्वीकृति एवं सम्मेलन आयोजित करने की अनुमति देकर हमें ऐसा ऐतिहासिक अवसर उपलब्ध कराया। इस अवसर पर मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि भारतवर्ष के प्रख्यात संसदविद्, संसदीय जगत के प्रकांड पंडित एवं विशिष्ट ज्ञान संपन्न विद्वानों की

field and profoundly learned persons from all over India. The fragrant memory of this golden day will definitely last forever in the memory of Chhattisgarh Legislative Assembly.

As all of us know well that the main function of Legislative bodies is to enact laws. Seeing from this point of view the function of Legislative bodies is to build a better future for people. This is not accomplished only by the laws that are passed. This is done by social relevance, moral force and ideological dynamism of the Legislative body, which in turn has an imprint on the public mind. Representative character of Legislature in our parliamentary system is the most striking feature. This is the forum where true and complete expression of peoples hope, aspiration, apprehension, fear, find outlet and provides opportunity through debates and discussion for Knowledge, and vision. The real wishes of the masses are manifested through expression by interaction and free discussion by the elected representatives of the masses.

We have been highly benefitted by the efficient functioning of parliamentary democracy in India. We have gained this benefit from our ancient traditions, democratic thought and experience of institutions. Important and meaningful words like'Ganatantra' 'Gananayak' and 'Ganpati' can be found in our ancient literature.Village Panchayats are our common heritage. Modern era is unique in so far as

गरिमामयी उपस्थिति व सानिध्य से हम अभिभूत हैं और आज के स्वर्णिम दिवस की मधुर स्मृति छत्तीसगढ़ विधान सभा के मानस पटल पर चिरस्थायी रूप से अंकित रहेगी।

जैसा कि आप और हम सब जानते हैं विधानमंडलों का प्रमुख कार्य विधि निर्माण का है। इस तरह से देखा जाए तो विधानमंडल का काम लोगों के बेहतर भविष्य की रचना करना है। जिस तरह से कानून पास किए जाते हैं उसी से यह काम पूरा नहीं हो जाता। विधानमंडल की जनमानस को प्रभावित करने की सामाजिक प्रासंगिकता, नैतिक बल और सैद्धान्तिक तीव्रता से यह काम होता है। हमारी संसदीय प्रणाली में विधानमंडल का प्रतिनिधिस्वरूप हमारी सबसे मूल्यवान विशेषता है। जनता की आशा, आकांक्षा, आशंका, भय, जानकारी, सूक्ष्म दृष्टि और प्रत्यक्ष ज्ञान की सच्ची और पूर्ण अभिव्यक्ति यहीं होनी चाहिए। जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा ऐसी अभिव्यक्ति की पारस्परिक क्रिया से और मुक्त चर्चा के परिणामस्वरूप जनता की वास्तविक इच्छा यहीं व्यक्त होती है।

भारत में संसदीय लोकतंत्र के कारगर ढंग से काम करने से हमें बहुत फायदा भी हुआ है। हमें यह फायदा अपनी प्राचीन परम्पराओं और लोकतांत्रिक विचारधारा तथा संस्थाओं के अनुभव से प्राप्त हुआ है। हमारे प्राचीन साहित्य में गणतंत्र, गणनायक और गणपति जैसे महत्वपूर्ण और अर्थपूर्ण शब्द खोजे जा सकते हैं। ग्रामीण लोकतंत्र अर्थात् ग्राम पंचायतों की परम्परा देश की साझी विरासत है। आज का युग वैज्ञानिक उन्नति और अंतर्राष्ट्रीय पारस्परिक संपर्कों का अभूतपूर्व युग है।

scientific progress and mutual relations on international basis are concerned. Today, there is cut throat competition in the political field. In such a scenario, it is necessary to convince people in the efficacy of purity of means and moral force.

Our democratic institutions can function well only if some essential values are kept intact. Respect and bonding of people to democratic institutions is also necessary for continuation of democratic polity. For this, consciousness of people's representatives in their individual and public behaviour is also necessary.

We have distinction in developing this healthy tradition wherein Presiding Officers of Legislative bodies not only get benefitted from mutual discussions and individual experiences by organizing such conferences but also endeavour to forge a possible consensus for solution of difficulties of general nature coming up during the daily working of the legislature. We are proud of the fact that this tradition of Presiding Officers Conference is continuing since September 1921 regularly and now organizing such conferences has become a permanent feature of our parliamentary traditions.

The utility of Presiding Officers' Conference in making legislative functions and procedures effective and useful in accordance with the basic spirit of the Constitution, striking coherence and balance amongst different components of Parliamentary governance,

आज राजनीति के क्षेत्रों में जबरदस्त प्रतिद्वंदिता है। ऐसी स्थिति में लोगों को साधनों की पवित्रता और नैतिक बल के प्रभाव के बारे में विश्वास दिलाना आवश्यक है।

हमारी लोकतांत्रिक संस्थाएँ तभी भली प्रकार काम कर सकती हैं जबकि कुछ जरूरी मानदण्डों को अखण्ड समझा जाए। लोकतांत्रिक जीवन पद्धति को चालू रखने के लिए लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति जनता का सम्मान और लगाव भी जरूरी है। इसके लिए जनप्रतिनिधियों की अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक आचरण में सजगता भी आवश्यक है।

विश्व के दूसरे देशों से भिन्न भारतवर्ष में हमने इस स्वस्थ्य परम्परा का विकास किया है कि जहाँ ऐसे सम्मेलन आयोजित कर विधानमंडलों के पीठासीन अधिकारी परस्पर विचार–विमर्श कर, अपने अनुभवों से न केवल लाभान्वित होते हैं अपितु दैनिक कार्यकरण के दौरान उपस्थित होने वाले सामान्य प्रकृति की कठिनाईयों के निराकरण हेतु यथा संभव सर्वमान्य सम्मति विकसित करने का प्रयास करते हैं। हमें गर्व है कि सितम्बर, 1921 से प्रारंभ हुआ पीठासीन अधिकारी सम्मेलन का यह सफर निरन्तर जारी है और अब ये सम्मेलन प्रतिवर्ष आयोजित करना हमारी संसदीय परम्पराओं का स्थायी स्वरूप ले चुका है।

संविधान की मूल भावना के अनुरूप विधायी कार्यों एवं प्रक्रियाओं को प्रभावी एवं कारगर बनाने, संसदीय शासन व्यवस्था के विभिन्न घटकों के बीच सामन्जस्य तथा संतुलन स्थापित करने प्रजातंत्र की मान–मर्यादा अखण्डता तथा चुनौतियों का

upholding dignity, decorum and integrity of democracy, firmly facing challenges and fulfilling expectations of masses is proven in itself. Our long experience tells us that conclusions emanating from decisions and ideological deliberations in these conferences have contributed significantly towards enriching our democracy in order to give new direction, thinking, speed and energy to Indian democracy.

The Presiding Officers participating in this conference are strong pillars of democracy. You all are eminent parliamentarians. You have special experience and knowledge. Definitely, your attention must have been drawn towards the challenges present before Parliamentary democracy and must have thought for a solution of these. This is the important time when we meet at a forum and exchange views on different aspects of Parliamentary system and its effective conduct and express our consent or dissent besides taking up serious ideological issues for discussion in the House.

Friends! mere procedure does not symbolize Parliamentary democracy, social and economic issues are also associated with it. In fact democracy is the name of a live, conscious procedure of making people participative and responsive equally by eradicating discrimination of all types and making changes in economic conditions in creating prosperity in the country.

Democracy is also a type of governance like other forms of governance but in today's age it is considered more

दृढ़तापूर्वक सामना करने तथा जन अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए पीठासीन अधिकारी सम्मेलन की उपादेयता स्वयं सिद्ध है। हमारा दीर्घ अनुभव हमें बताता है कि इन सम्मेलनों से प्राप्त निष्कर्ष सार और वैचारिक चिंतन से उपजे निर्णयों ने भारतीय प्रजातंत्र को नई दिशा, सोच, गति और नई ऊर्जा देने के साथ ही प्रजातंत्र को निरंतर पुष्ट किए जाने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इस सम्मेलन में भाग लेने वाले आप सभी पीठासीन अधिकारी प्रजातंत्र के एक मजबूत स्तंभ और प्रख्यात संसदविद् हैं। आपके पास विशेष अनुभव और ज्ञान है निश्चित रूप से संसदीय प्रजातंत्र के समक्ष उपस्थित चुनौतियों की ओर आपका ध्यान गया होगा और आपने इसके समाधान के लिए सम्यक सोच और विचार भी किया होगा। यही वह अत्यन्त महत्वपूर्ण समय है जब हम एक साथ एक मंच पर एकत्रित होते हैं तथा संसदीय शासन प्रणाली, उसके प्रभावी प्रचालन के विभिन्न पहलुओं पर भी विचारों का आदान–प्रदान, सहमति, असहमति तथा गंभीर वैचारिक संसदीय चिंतन–मंथन करते हैं।

साथियो ! संसदीय लोकतंत्र मात्र प्रक्रिया का नाम नहीं है इसके साथ सामाजिक और आर्थिक संदर्भ भी जुड़े हुए हैं। वस्तुतः आर्थिक स्थिति में बदलाव लाकर सभी प्रकार के भेदभाव को मिटाते हुए देश की सुख–समृद्धि के निर्माण में सभी को समान रूप से सहभागी तथा उत्तरदायी बनाने की जीवंत जागृत प्रक्रिया का नाम लोकतंत्र है।

लोकतंत्र भी अन्य शासन पद्धतियों की तरह एक शासन पद्धति ही है, लेकिन आज के युग में इसे शासन पद्धति से कुछ

than that. Expectations of people from this system have increased. Today, it has taken the form of a life style, a social order, a cultural norm, a political order. We are fortunate that there is a successful democratic system in India and we are known as the largest successful democracy in the world.

If we have an earnest desire for keeping this democracy live and healthy, we will have to explore the possibilities of maximizing the horizons of democracy for giving serious thought to the welfare of the entire human race including subjects like nature, life-animate or inanimate- unexplored hitherto.

Hon'ble guests, on this occasion, I would like to mention a distinct achievement of Indian democracy that the India Branch of the Commonwealth Parliamentary Association, Hon'ble Hashim Abdul Halim, Speaker, West Bengal Legislative Assembly, has been elected Chairman of the Executive Committee of Commonwealth Parliamentary Association. He has defeated his rival Sir Jeoffry Henry of New Zealand who is the Deputy Prime Minister of Cook Island by 115 votes. In this election Hon'ble Halimji secured 188 votes while Sir Henry got only 73 votes.Hon'ble Halimji's victory certainly underlines the international importance, influence and respect that India commands. I, on behalf of all of you, heartily congratulate him on this great achievement.

अधिक माना जाता है। इससे लोगों की कुछ अधिक अपेक्षाएँ हैं, आज यह एक जीवन पद्धति, एक सामाजिक व्यवस्था, एक सांस्कृतिक प्रतिमान राजनैतिक व्यवस्था का एक साकार स्वरूप ले चुका है। इसे हम अपना सौभाग्य कह सकते हैं कि भारत में सफल लोकतांत्रिक व्यवस्था है और हमें विश्व के सबसे बड़े सफल लोकतांत्रिक देश के रूप में जाना जाता है।

यदि हम लोकतंत्र को जीवित एवं स्वस्थ्य रखने के प्रबल आकांक्षी है तो हमें समग्र मानव कल्याण, प्रकृति, जड़ एवं जीवन के अनछुए विषयों पर भी गंभीर चिंतन कर लोकतंत्र के अधिकाधिक विस्तार की संभावनाओं की तलाश करनी होगी।

माननीय अतिथिगण ! इस अवसर पर मैं भारतीय लोकतंत्र की एक विशिष्ट उपलब्धि का भी जिक्र करना चाहूँगा कि 09 सितम्बर, 2005 को राष्ट्रकुल संसदीय संघ के एक्ज्यूकेटिव कमेटी के चेयरमेन के निर्वाचन में राष्ट्रकुल संसदीय संघ के भारत गणराज्य इकाई के माननीय हासिम अब्दुल हलीम, अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल विधान सभा निर्वाचित हुए हैं। उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी न्यूजीलैंड के सर जाफरी हेनरी जो कुक आयलैण्ड के उप प्रधानमंत्री हैं उनको 115 मतों से पराजित किया। इस निर्वाचन में माननीय हलीम जी को 188 मत प्राप्त हुए वहीं सर हेनरी मात्र 73 मत प्राप्त कर सके। निश्चित रूप से माननीय श्री हलीम जी की यह विजय भारत के अंतर्राष्ट्रीय महत्व, प्रभाव एवं सम्मान को रेखांकित करती है। मैं उन्हें अपनी ओर से तथा आप सभी की ओर से इस अभूतपूर्व उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

Hon'ble guests, I would beg of your kind permission to draw your attention to the masses affected by the recent natural disaster. In the devasting earthquake which hit the North West region of the Indian sub-continent on 8th October, 2005 thousands of people of Jammu and Kashmir and Pak Occupied Muzaffarabad have lost their lives and property. Thousands of people have been rendered homeless and died prematurely. On this occasion, I express my heartfelt condolence and grief to those who have been affected by the disaster.

Hon'ble guests, as I have already mentioned that our State is a newly created State and our Legislative Assembly has completed only five years, but in this short period, Chhattisgarh Legislative Assembly has established great parliamentary convention and records and created several new dimensions. Chhattisgarh Legislative Assembly has a unique feature of mutual coordination and understanding between the ruling and the opposition parties. Despite being a newly created State, we hope that rising above all narrow considerations we will develop such unique conventions that will make the nation proud. I believe that our achievement will reach the skies. We will make efforts that will strengthen the national unity and integrity of the country.

Though we have made all out effort at every level to welcome and provide facilities to the guests, but this is a big event and this newly created State has its own limitations and resource-related constraints, so it is quite

माननीय अतिथिगण ! मैं आप सब का ध्यान विषय से हटकर प्राकृतिक प्रकोप से प्रभावित जनसमूह की ओर आकर्षित करने की अनुमति चाहूँगा। दिनांक 08 अक्टूबर, 2005 को भारतीय उप महाद्वीप के उत्तर–पश्चिम में आये विनाशकारी भूकम्प से जम्मू–कश्मीर और पाक अधिकृत मुजफ्फराबाद के हजारों लोगों को अपने जान–माल से हाथ धोना पड़ा है। हजारों लोग बेघरबार एवं असमय काल कवलित हो गए हैं। मैं इस अवसर पर सभी प्रभावित लोगों के प्रति हार्दिक संवेदना एवं दुख व्यक्त करता हूँ।

सम्माननीय अतिथिगण ! मैंने पहले ही उल्लेख किया है यह नवोदित राज्य है एवं हमारी संसदीय यात्रा केवल पाँच वर्षों की है, किन्तु इस अल्प अवधि में ही छत्तीसगढ़ विधान सभा ने उच्च संसदीय परम्पराएँ कायम की हैं, कई नये संसदीय आयाम और प्रतिमान स्थापित किए हैं। छत्तीसगढ़ विधान सभा में पक्ष और विपक्ष के मध्य आपसी समन्वय और संतुलन का विलक्षण संयोजन है। नये राज्य होने के बावजूद हमें उम्मीद है कि हम संकीर्ण दायरों से ऊपर उठकर अपनी ऐसी विशिष्टताओं का विकास करेंगे जिसके ऊपर राष्ट्र को गर्व हो। मुझे विश्वास है कि हमारी उपलब्धियॉं गगन–चुम्बी होंगी, हमारी विविधता और प्रयास ऐसे होंगे जिससे राष्ट्रीय अखण्डता और एकता को संबल प्राप्त हो सकेगा।

यद्यपि हमने हर स्तर पर आप सब अतिथियों के स्वागत तथा सुविधाओं के लिए यथासंभव प्रयास किया है किन्तु यह एक वृहद आयोजन है। नवोदित राज्य की अपनी सीमाएँ और संसाधन संबंधी कमियॉं हैं इसलिए संभव है कि हमसे कहीं पर

possible that we may have fallen short in the matter of making arrangements, providing facilities and other hospitality. I therefore request all our esteemed guests to kindly forgive us for all those shortcomings.

Before I conclude, I would like to thank the illustrious Chief Minister of the State Dr. Raman Singhji for providing financial assistance liberally and for extending all resource related cooperation. I would also like to thank his colleagues in the Council of Ministers, Officers of State administration and Shri Devendra Verma, Secretary, Chhattisgarh Legislative Assembly and all the officers and employees of the Secretariat without whose enthusiastic co-opration such a grand conference could not have been held successfully.

Hon'ble Chairman of the Conference and Presiding Officers, I am once again grateful to all of you for your participation in this conference. I am sure that your stay at Raipur, the Capital of this progressive State would be comfortable, interesting, pleasant and a memorable one.

In the end, I conclude with the hope that the discussion which takes place in this conference will not only strengthen a healthy parliamentary work culture in the democratic polity but will also add luster to it.

Thank you !

Jai Bharat ! Jai Chhattisgarh !

व्यवस्था, सुविधा अथवा आवभगत संबंधी कोई त्रुटि, चूक या खामियाँ हो गई हों इसके लिए हमारे अतिथिगण कृपया हमें क्षमा करेंगे।

इसके पहले मैं अपनी वाणी को विराम दूँ उदार वित्तीय सहयोग एवं संसाधन संबंधी समस्त सहयोग के लिए मैं इस राज्य के यशस्वी मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह जी का एवं उनके मंत्रिपरिषद् के सहयोगियों के साथ राज्य शासन के अधिकारियों एवं श्री देवेन्द्र वर्मा, सचिव, छत्तीसगढ़ विधान सभा और सचिवालय के समस्त अधिकारी–कर्मचारियों को धन्यवाद देना चाहूँगा जिनके उत्साहवर्धक सहयोग के बिना ऐसा गरिमामय सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित करना सहज संभव नहीं था।

सम्मेलन के सम्माननीय सभापति जी और पीठासीन अधिकारी साथियों ! इस सम्मेलन में आप सभी की गरिमामय प्रेरणादायी उपस्थिति के लिए पुनश्च आप सब के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। मुझे विश्वास है विकास पथ पर अग्रसर इस राज्य की राजधानी रायपुर में आपका यह प्रवास सुविधापूर्ण, सुरूचिपूर्ण, आनन्ददायक और अविस्मरणीय रहेगा।

अन्त में इस अपेक्षा और उम्मीद के साथ कि इस सम्मेलन में सम्पन्न विचार–विमर्श से न केवल प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में स्वस्थ्य संसदीय कार्य संस्कृति पुष्ट होगी अपितु इसमें और अधिक निखार आ सकेगा, मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

धन्यवाद !

जय भारत ! जय छत्तीसगढ़ !